

सैय्यदना अली मुर्तजा रज़ि० رضي الله عنه

alhamdulillah-library.blogspot.in







अश्फाक अहमद खां

مکتبۃ الفہیم
मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

पेश लफ्ज़

वह कमसिन थे, लेकिन शऊर रखते थे। इस उम्र में भी उन्हें अच्छे और बुरे के दरम्यान फर्क मालूम था। सबसे बड़ी और अहम बात यह थी कि उनकी परवरिश वह हाथ कर रहे थे, जो सबसे ज़्यादा बाबरकत थे। वह उन्हीं के साथ अपनी ज़िन्दगी का एक-एक पल गुज़ार रहे थे। जब पूरा खित्ता हिदायत की किरणों से जगमगा उठा तो उन्हें बच्चों में सबसे पहले उस रौशनी से फैज़याब होने का मौका मिला। रौशनी की यह खूबी होती है कि वह सारे छुपे हुए पहलूओं को और गोशों का बेनिकाब कर देती है। हिदायत की रौशनी में उनकी ज़ात को बचपन में ही इस तरह मुनव्वर कर दिया कि उनकी सीरत और किरदार पर सिर्फ और सिर्फ हक और सच्चाई का गल्बा हो गया।

उनकी ज़िन्दगी इल्म व फज़्ल का मुरक्का बन गई। तरबियत करने वाले मुकद्दस हाथों ने उन्हें इल्म का समन्दर बना दिया और इल्म ही उनका ओढ़ना बिछौना बन गया। हिकमत और दानाई उनकी हर-हर बात से झलकती थी। मुश्किल मुआमलात में रहनुमाई के लिए लोग इन्हीं की तरफ रूजू करते थे। उनके दानिशमन्दाना फैसले अकसर लोगों को हैरत में डाल देते थे उनके बारे में कहा गया कि वह हममें सबसे बड़े काज़ी हैं। तारीख की किताबें भी इस बात की गवाही देती हैं।

लेकिन इल्म व फज़्ल में यह मकाम पाने के साथ-साथ वह दूसरी खूबियों में भी किसी से कम नहीं थे। उन्हें तलवार चलाने में महारत थी, नेज़ा बाज़ी के फन में भी कमाल हासिल किया। फन्ने कुश्ती में भी खूब नाम कमाया, मैदाने जंग में उनकी बहादूरी नुमाया होती थी। इसी बहादूरी की बिना पर उन्हें अल्लाह के शेर का लकब मिला।

एमारत की ज़िम्मेदारी ने भी उनके मिज़ाज में कोई तबदीली पैदा नहीं की। वह सादह मिज़ाज थे और फकरोदरवेसी में ज़िन्दगी गुज़ारते थे। वह शानो शौकत से गुरेज़ करते थे। उन्होंने हमेशा अद्ल व इंसाफ से काम लिया। दूसरे के साथ भी और अपने साथ भी। रिआया की बेहतरी और फलाह व बहबूद को अपना अव्वलीन फर्ज़ जाना। उन्होंने अपनी पूरी उम्र किसी न किसी अन्दाज़ में खिदमत करते हुए गुज़ार दी। अपनी कोशिशों से उन्होंने सैकड़ों लोगों को दीन के दायरे में दाखिल किया।

इल्म व दानिश की तस्वीर यह कौन थे? किताब पढ़िए..... नाम आपके सामने आ जाएगा।

वस्सलाम

अब्दुलमालिक मुजाहिद

बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम

कितनी अजीब बात थी।

उनके पास ताकत थी, इख्तियार था.....दुनिया की बड़ी-बड़ी हुकूमतें उनके सामने सरनिगुं हो चुकी थी। हर आदमी उनकी आंख के एक इशारे पर अपनी जान कुरबान करने के लिए तैयार था, लेकिन इस ताकत और इख्तिरयार को उन्होंने कभी भी अपनी ज़ात के लिए इस्तेमाल नहीं किया। उस वक्त भी नहीं, जब उनकी किमती ज़िरह गुम हो गई। उसे तलाश करने की कोशिश की, लेकिन ज़िरह नहीं मिली, वह उसको अल्लाह की रिज़ा समझकर खामोश होकर बैठ रहे।

चन्द ही दिन गुज़रे कि बाज़ार में उन्हें एक यहूदी के पास अपनी ज़िरह नज़र आ गई। उसे रोक कर कहाः

''यह ज़िरह मेरी है, तुम्हरे पास कहां से आ गई?''

यहूदी ने सख्ती से इंकार करते हुए कहाः ''बिल्कुल नहीं यह ज़िरह मेरी है।''

वह हाकिमे वक्त थे। इस्लामी सल्तनत के ताकतवर तरीन आदमी, चाहते तो उससे ज़बरदस्ती भी ले सकते थे। उसे गिरफतार भी करवा सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि दिल खौफे इलाही से मामूर था। वह अपने दावे को साबित किए बगैर उससे ज़िरह नहीं लेना चाहते थे। चुनांच मुआमले को वह काज़ी की अदालत में ले गए।

यह काज़ी शुरैह की अदालत थी। काज़ी शुरैह रह० अपने वक्त के बहुत नामवर और इंसाफ पसंद काज़ी थे। इंसाफ के लिए उन्होंने कभी किसी बड़े से बड़े शख्स के इख्तियार और दबदबे की भी परवाह नहीं की थी। उन्होंने कई बार हाकिमे वक्त के खिलाफ भी फैसले दे डाले थे।

वह यहूदी को लिए काज़ी शुरैह रह० की अदालत में पहुंचे। काज़ी शुरैह ने बड़े गौर से उनका दावा सुना। वह कह रहे थे:

"यह ज़िरह मेरी है, कुछ दिन पहले गुम हो गई थी आज अचानक यह इस यहूदी के पास नज़र आ गई, मैंने इससे कहा कि यह ज़िरह मेरी है, लेकिन यह इस बात को तसलीम नहीं कर रहा।"

काज़ी शुरैह ने इस यहूदी से पूछा कि वह उनकी बात के जवाब में क्या कहता है?

यहूदी ने कहाः "यह ज़िरह मेरी है, इनका दावा दुरूस्त नहीं है।"

काज़ी शुरैह रह० यहूदी का जवाब सुन कर फिर उनकी तरफ मुतवज्जह हुएः

"क्या आपके पास अपने दावे के सुबूत में कोई गवाह है?"

वह बोलेः "मेरा बेटा और गुलाम इस बात के गवाह हैं।"

काज़ी शुरैह रह० ने नफी में सर हिलाया और कहाः "बाप के हक में बेटे की और आका के हक में गुलाम की गवाही कबूल नहीं की जा सकती।"

हाकिमे वक्त ने कहाः "कितनी अजीब बात है, आप मेरे बेटे की गवाही कबूल नहीं करते, क्या आपको मालूम नहीं कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उनके बारे में फरमाया था कि वह जन्नत में नवजवानों के सरदार हैं।"

काज़ी शुरैह रह० ने कहाः "मुझे यह बात मालूम है लेकिन मैं उनकी गवाही नहीं लूंगा।" अगर किसी के रूतबे को देख कर फैसला करना होता तो आपका यह फरमाना की काफी था कि यह ज़िरह मेरी है।"

बज़ाहिर तो यह बड़ी तकलीफ़दह बात थी कि हाकिमे वक्त की बात नहीं मानी जा रही थी, उनका जाएज़ हक उन्हें नहीं दिया जा रहा था, उनके गवाहों को तसलीम नहीं किया जा रहा था। लेकिन वह जानते थे कि काज़ी शुरैह रह० हक बात कह रहे हैं, उन्होंने सिर्फ सच्चाई का बोल बाला किया है। चुनांच वह खुश होकर बोलेः

"मुझे आपका फैसला मंजूर है, यह ज़िरह अब यहूदी के पास ही रहेगी।"

काज़ी शुरैह रह० का फैसला यहूदी के लिए इतना गैर मुतवक्के था कि वह चन्द लम्हों के लिए तो सक्ते की हालत में चला गया। क्या दुनिया में कोई अदालत ऐसी भी हो सकती है, जो रोब और ताकत के सामने सर झुकाने से इंकार कर देती हो। बड़े-बड़े बादशाहों के सामने अदालतें बे बस होती रहती हैं और यह हाकिमे वक्त, इस वक्त दुनिया की सबसे बड़ी इस्लामी सल्तनत के हाकिमे थे। चाहते तो बज़ोर अपनी बात मनवा सकते थे, लेकिन अजीब बात थी न तो काज़ी इनकी कुव्वत व इख्तियार से खौफ ज़दा हुआ और न हाकिमे वक्त उनके फैसले पर नाराज़ हुए वह यहूदी बेइख्तियार पुकार उठाः

"मुझे यकीन हो गया कि आपका दीन सच्चा है, इसका यकीन मुझे हाकिमे वक्त के खिलाफ आपके फैसला सुनाने और उनके फैसला तसलीम करने से हुआ। यह ज़िरह वाकई उनकी है।"

इसके साथ ही उसने कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गया।

यह हाकिमे वक्त कौन थे? आपके ज़ेहन में उनका नाम यकीनन आ चुका होगा।

यह थे चौथे खलीफ-ए-राशिद..... अमीरूल मोमिनीन सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० आप ६०१ ई० में मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए आप रसूलुल्लाह स.अ.व. के सगे चचा अबूतालिब के बेटे थे। गोया आप और नबी स.अ.व. एक ही खानदान बनू हाशिम से तअल्लुक रखते थे, जो कुरैश का सबसे ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ खानदान था आपके वालिद का नाम अबदे मनाफ था। लेकिन वह अपनी कुन्नियत अबूतालिब से मशहूर थे। रसूले करीम स.अ.व. के वालिद उनके सगे भाई थे। अबू तालिब का मक्का के मुआशरे में बहुत नुमाया और मुमताज़ मकाम था। मक्का की सरदारी भी उन्हीं के पास थी वह रसूल अल्लाह स.अ.व. पर जान छिड़कते थे। नबी-ए-करीम स.अ.व. को अपनी औलाद से भी ज़्यादा चाहते थे। नबी-ए-करीम स.अ.व. ने अपनी उमरे मुबारक को पचीस साल उनके साथ, उनके ज़ेरे साया गुज़ारे फिर तिजारत के पेशे को इख्तियार करके दूसरे मुल्कों में जाना शुरू किया, तो उनकी ज़िन्दगी का कद्र मख्तलिक दौर शुरू हुआ। सैय्यदा खदीजा रज़ि० से शादी के बाद नबी स.अ.व. ने अलग रहना शुरू कर दिया। जब नबूवत का ऐलान किया, कुरैश जान के दुशमन हागा यह अबूतालिब ही थे जिन्होंने मुखालिफत के उन तूफानों का डट कर मुकाबला किया और हमेशा आप स.अ.व. का साथ दिया।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की वालिदा का नाम फातिमा बिन्त असद रज़ि० था उनका तअल्लुक भी हाशिमी खानदान से था। वह नबी अकरम स.अ.व. पर ईमान ला चुकी थीं। नबी-ए-करीम स.अ.व. से इन्तेहा दर्जे की मुहब्बत रखती थीं। शायद इसी मुहब्बत का नतीजा था कि सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी आप स.अ.व. से बहुत मुहब्बत रखते थे वालिदा ने इनका नाम असद या हैदर रखा। लेकिन वालिद ने

अली नाम पसंद किया। फिर इसी नाम पर इत्तेफाक कर लिया गया। अलबत्ता हैदर उनका लकब बन गया। आपकी कुन्नीयत अबुल हसन और अबु तोराब थी।

अबू तोराब की कुन्नियत नबी स.अ.व. ने आपको अता फरमाई। आपके लकब असद, मुर्तज़ा और हैदर हैं।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की उम्र ५ बरस की थी कि मुल्क कहत का शिकार हो गया। लोग फाकों मरने लगे। खाने के लिए कुछ मयस्सर था न मिलने की सूरत नज़र आती थी। अबू तालिब उस वक्त एक बड़े कुंबे के सरबराह थे। उन पर मुश्किल वक्त आ गया। तंगी में गुज़र बसर होने लगी रसूलुल्लाह स.अ.व. की निगाहों से अपने प्यारे चचा के हालात पोशीदा नहीं थे। अपने चचा का हाथ बटाने के लिए और उनका बोझ कम करने के लिए आप स.अ.व. ने उनसे सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को मांग लिया। यूं सैय्यदना अली मुर्तजा रज़ि० आप स.अ.व. के साथ रहने लगे। इस मौके पर नबी-ए-करीम स.अ.व. की ज़ौजा मुहतरमा सैय्यदा खदीजा रज़ि० ने भी भरपूर किरदार अदा किया। उन की तरबियत और परवरिश में बराबर का साथ दिया।

नबी-ए-करीम स.अ.व. ने जब नबूवत का ऐलान किया, उस वक्त सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० तकरीबन दस बरस के थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. की दावत पर सबसे पहले सैय्यदा खदीजा रज़ि० और सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने लब्बैक कहा। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने भी हक की दावत कबूल करने में किसी हिचकिचाहट का मुज़ाहिरा न किया। फौरन मुसलमान हो गए। यूं बच्चों में सबसे पहले उन्ही को इस्लाम लाने की सआदत नसीब हुई। जब रसूले करीम स.अ.व. नमाज़ पढ़ते तो आप भी उनके साथ नमाज़ पढ़ते थे। एक दिन उनके वालिद

अबू तालिब ने उन्हें आप स.अ.व. के साथ नमाज़ अदा करते देखा तो पूछ लियाः

"बेटा, ये क्या दीन है जिस पर तुम चल रहे हो?

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उनसे छुपाना मुनासिब न समझा और कहाः

"अब्बा जान, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आया हूं उनकी तसदीक कर चुका हूं और अभी मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी है।"

बेटे की बात सुन कर अबू तालिब बोलेः "मुहम्मद स.अ.व. तुम्हें भलाई के सिवा किसी चीज़ की तरफ नहीं बुलाएंगे, तुम उनके साथ लगे रहो।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० पांच साल की उम्र से उस आगन में कदम रख दिया था जहां सिर्फ और सिर्फ खैर और भलाई थी। उनकी तरबियत कायनात के बेहतरीन इंसान मुहम्मद स.अ.व. और सैय्यदा खदीजा रज़ि० जैसी मिसाली खातून ने की थी। इस तरबियत ने उन्हें इल्म का समन्दर बना दिया। फितरत में बचपन ही से नेकी थी इसलिए बुतों को नफरत के काबिल समझा। लड़कपन ही में लिखने पढ़ने का हुनर सीख लिया जहां पढ़ने लिखने का रिवाज न हो वहां इल्म हासिल करना बड़ी खूबी की बात है। तलवार चलाने में महारत भी इसी उम्र में हासिल कर ली। नेज़ा बाज़ी के फन में भी कमाल पाया। लड़कपन की यह सलाहियतें जवान होने तक खूब निखर आयीं। लड़ने के सारे दाव पेच और कायदे अच्छी तरह सीख लिए। उनका जिस्म बहुत ताकतवर था, कुश्ती लड़ने का फन सीखा तो खूब नाम पाया, कोई कुश्ती में उनसे नही जीत सकता था।

रसूलुल्लाह स.अ.व. ने मुसलमानों को मदीने की तरफ हिजरत का

हुक्म दिया। मुसलमान मौका पाकर हिजरत करते गए, इसी दौरान कुफ्फार ने मिलकर यह तय किया कि (नऊज़ुबिल्लाह) रसूलुल्लाह स.व.अ. को कत्ल कर दिया जाए। न वह रहेंगे, न उनका दीन रहेगा। रसूलुल्लाह स.अ.व. को भी अल्लाह तआला ने उनके इरादों की खबर कर दी। चुनांचे आप स.अ.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को अपने बिस्तर पर लिटा कर लोगों की अमानतें उनके सुपुर्द कीं और फरमायाः

"यह अमानतें उनके मालिकों को सौंप कर मदीने आ जाना।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने रसूलुल्लाह स.अ.व. के हुक्म पर सर झुका दिया और बिस्तर पर लेट कर सो गए। उस वक्त आप स.अ.व. का घर काफिरों के घेरे में था। बज़ाहिर उन लोगों के नज़दीक मुहम्मद स.अ.व. का बच निकलना मुश्किल नज़र आता था, लेकिन अल्लाह की मदद शामिलेहाल थी। आप स.अ.व. घर से क़ुरआन पढ़ते हुए निकले। अल्लाह ने काफिरों की आखों पर पर्दे डाल दिए। वह आप स.अ.व. को देख ही न सके। जब सुबह का सूरज तुलू हुआ तो काफिरों को पता चला कि रसूलुल्लाह स.अ.व. तो निकल चुके हैं। नबी स.अ.व. के बिस्तर पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को पाकर उन्हें बहुत तैश आया। उन्हें पकड़ लिया और आखें दिखाकर बोलेः

"तुम्हारे आका कहां हैं?"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने बड़े इतमिनान भरे लेहजे में कहाः "मुझे कुछ मालूम नहीं है।"

इस कोरे जवाब ने उनके पारे और भी चढ़ा दिया। उन्हें धमकाने लगे, खूब डांट डपट की। लेकिन उनसे कोई जवाब न पाकर उन्हें अपने साथ ले जाकर बन्द कर दिया। लेकिन ये हरबा भी उनसे कुछ न उगलवा

सका। तंग आकर उन्होंने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को छोड़ दिया। उनकी कैद से निकलने के बाद लोगों को उनकी अमानतें लौटाईं और फिर मदीने का रूख किया। नबी-ए-करीम स.अ.व. उस वक्त कुबा में तशरीफ फरमा थे कुबा मक्के से पौने तीन सौ मील के फासले पर वाके है। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने यह सफर पैदल तय किया। जब सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० नबी-ए-करीम स.अ.व. की खिदमत में पहुंचे तो पांव में छाले पड़ चुके थे। लेकिन इस तवील सफर की थकन उस वक्त दूर हो गई जब नबी-ए-करीम स.अ.व. की मुहब्बत और शफकत का साया नसीब हुआ। वहां से नबी स.अ.व. के साथ मदीने पहुंचे।

हिजरत करके मदीने आने वाले मुसलमानों को इबादत में बहुत दुशवारी थी। नमाज़ अदा करने के लिए अभी तक कुछ मुनासिब इन्तिज़ाम नहीं किया गया था। चुनांचे मस्जिदे नबवी की तामीर का आगाज़ किया गया। मस्जिद की तामीर में रसूलुल्लाह स.अ.व. और दूसरे सहाबा-ए-किराम ने दिलों जान से हिस्सा लिया। नबी स.अ.व. तामीर के दौरान अशआर भी पढ़ते थे, जिनका मफहूम यह है:

"जो मास्जिद की तामीर करता है, खड़े होकर और बैठकर मुशक्कत बर्दाशत करता है और जो गर्दगुबार और मिट्टी से बचने के लिए उससे जी चुराता है वह दोनों बराबर नहीं हो सकते।"

हिजरत के बाद मदीने के अंसार और मक्के के मुहाजिरों में रसूलुल्लाह स.अ.व. के फरमान के मुताबिक भाईचारे का रिश्ता कायम हुआ। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को आप स.अ.व. ने अपना भाई बनाया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० अपनी खुशकिस्मती पर नाज़ करने लगे। खुशनसीबी के रस्ते पर सफर का आगाज़ हो चुका था। हिजरत के दूसरे साल रसूलुल्लाह स.अ.व. ने अपनी प्यारी बेटी सैय्यदा फातिमा

रज़ि० की शादी उनसे कर दी।

सैय्यदा फातिमा रज़ि० की रूखसती निकाह के फौरन बाद नहीं हुई बल्कि चन्द माह के बाद की गई। रूखतसी के वक्त रसूलुल्लाह स.अ.व. ने अपनी प्यारी बेटी को एक बिस्तर, चमड़े का एक तकिया जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, पानी का एक मशकिज़ा, मिट्टी के दो घड़े, मिट्टी का एक प्याला, दो चादरें और अनाज पीसने की चक्की दी। ये था अल्लाह के प्यारे हबीब स.अ.व. का अपनी प्यारी बेटी के लिए जहेज़। सैय्यदा फातिमा रज़ि० रूखसत होकर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के घर चलीं गईं उनके रूखसत होने के बाद रसूलुल्लाह स.अ.व. उनके यहां तशरीफ लाए, पहले दरवाज़े पर खड़े होकर अन्दर आने की इजाज़त मांगी, फिर अन्दर दाखिल हुए। आप स.अ.व. ने एक बर्तन में पानी मंगवाया, अपने दोनों हाथों में पानी लेकर उन पर छिड़का और फरमाया:

"ऐ फातिमा! मैंने तुम्हारी शादी अपने खानदान के बेहतरीन शख्स से की है।"

शादी के बाद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० सैय्यदा फातिमा रज़ि० का बहुत ख्याल रखते थे। सैय्यदा फातिमा रज़ि० भी उनकी बहुत इज़्ज़त और एहतिराम करतीं थीं। एक दिन नबी-ए-करीम स.अ.व. उनके यहां तशरीफ लाए सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० उस वक्त घर पर नहीं थे। उनके मुतअल्लिक सैय्यदा फातिमा रज़ि० से पूछा तो उन्होंने कहा:

"मेरा उनसे कुछ झगड़ा हो गया था, वह गुस्से में घर से बाहर चले गए हैं।"

आप स.अ.व. बाहर तशरीफ लाए पता चला कि सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० मस्जिद में सो रहे हैं। आप स.अ.व. मस्जिद में तशरीफ ले गए। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० बड़ी बेफिकरी के साथ वहां सो रहे थे।

उनकी चादर पहलू से सरक गई थी और जिस्म को मिट्टी लग गई थी। आप स.अ.व. ने पहले मिट्टी को पोछा, फिर फरमायाः

"अबू तोराब, उठो! अबू तोराब, उठो!"

उस दिन से उनका लकब अबू तोराब मशहूर हो गया। तोराब, मिट्टी को कहते हैं। अबू तोराब का मतलब हुआ, मिट्टी वाला। जब कोई उन्हें अबू तोराब कहकर पुकारता तो बहुत खुश होते।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० मेहनत मज़दूरी करके रोज़ी कमाते थे। उनकी ज़िन्दगी बहुत सादा अन्दाज़ में गुज़री। उन्हें दुनिया के माल से कोई रगबत थी और न सामाने ऐश की कोई परवाह। रूखी सूखी खाकर अपने रब का शुक्र अदा करते थे।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० मैदाने जंग के शहसवार थे। अपनी दिलेरी की बिना पर असदुल्लाह (अल्लाह का शेर) के लकब से मशहूर हुए। लड़ाई के मैदान में कदम रखते तो फरमाया करतेः

"लड़ाई के मैदान में मुझे परवाह नहीं होती कि मौत मेरी तरफ आ रही है या मैं मौत की तरफ बढ़ रहा हूं।"

बदर की लड़ाई में दोनों लश्कर मुकाबिल हुए, उस दौर में रवाज था कि आम लड़ाई से पहले नामवर और दिलेर एक दूसरे को लड़ने की दावत दिया करते थे। काफिरों के लश्कर से उतबा, वलीद और शैबा निकले और मुसलमानों को ललकार कर मुकाबले की दावत दी। मुसलमानें की तरफ से उनसे मुकाबले के लिए औफ, मऊज़ और अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़िअल्लाहो अन्हुम निकले। लेकिन उतबा ने पुकार कर कहाः

"ऐ मुहम्मद स.अ.व. यह लोग हमारे बराबर के नहीं हैं, हमारी कौम के लोगों को हमारे मुकाबले में भेजो।"

रसूलुल्लाह स.अ.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि०, सैय्यदना हमज़ा, और सैय्यदना ओबैदा बिन हारिस रज़िअल्लाहुअन्हुम को हुक्म दियाः

"आगे बढ़कर उनका मुकाबला करो।"

तीनों, काफिरों के चैलेंज का जवाब देने के लिए मैदान में कूद पड़े। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का मुकाबला वलीद से हुआ। उन्होंने आनन फानन उसे काट कर रख दिया। सैय्यदना हमज़ा रज़ि० के मुकाबले पर शैबा था, वह भी उनके हाथों मौत के घाट उतर गया। सैय्यदना ओबैदा रज़ि० तीसरे काफिर उतबा पर झपटे, लेकिन बद किस्मती से उतबा का दाव चल गया और सैय्यदना ओबैदा रज़ि० ज़ख्मी हो गए। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० उतबा की तरफ लपके और बड़े जोश के साथ उस पर वार करके उसे जहन्नम रसीद कर दिया।

आम लड़ाई का आगाज़ हुआ। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० इतनी दिलेरी के साथ लड़े कि दुश्मनों की सफें उलट कर रख दीं। वह एक तुफान की तरह दुश्मन की तरफ लपकते थे, जो भी उनकी तलवार की ज़द में आता मौत उसका मुकद्दर हो जाती दूसरे मुसलमान भी इसी जोश और जज़्बे के साथ लड़े। बिल आखिर मुसलमानों को फतह नसीब हुई। अबू जहल समेत कुरैश के सत्तर बड़े-बड़े सरदार इस लड़ाई में मारे गए।

उहुद की लड़ाई में भी आपने अपनी फितरी दिलेरी का मुज़ाहिरा किया। जब काफिरों की तरफ से तलहा बिन अबी तल्हा मैदान में निकला

और पुकाराः

"कोई है जो मेरे मुकाबले पर आए?"

उसकी ललकार सुन कर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० दौड़ते हुए उसके सामने पहुंच गए अभी तल्हा संभलने भी न पाया था कि तलवार के एक ही वार से उसे ढेर कर दिया। तल्हा की मौत का मंज़र देख कर उसका भाई अबू सईद रह न सका। वह तैश के साथ मैदाने जंग में आया। लेकिन सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उस पर भी तलवार का वार किया, वह ज़ख्मी होकर ज़मीन पर गिर पड़ा और फिर सैय्यदना साद बिन अबी वक्कास रज़ि० के हाथों मारा गया।

इन दो बहादुरों की मौत देख कर मुश्रिकीन बहुत भिन्नाए, उनके लश्कर से उनका सबसे बड़ा बहादुर 'अरतात' निकला। उसे अपनी बहादुरी और ताकत पर बहुत घमण्ड था, उसने ललकार कर कहाः

"कोई है जो मेरे मुकाबले पर आए।"

उसके गुरूर का नशा उतारने के लिए सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० फिर मैदान में उतरे और देखते ही देखते अरतात अपने ही खून में नहा कर मौत का शिकार हो गया। उसके बाद आम लड़ाई शुरू हो गई। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० और सैय्यदना हमज़ा रज़ि० काफिरों की सफों में यलगार करते हुए दूर तक पहुंच गए। उनकी तलवारों की काट ने काफिरों के पांव उखाड़ दिए। फतह मुसलमानों के कदम चूम चुकी थी कि दर्रे पर मौजूद दस्ते के अपनी जगह छोड़ जाने पर काफिरों को मौका मिल गया। यह उस तरफ से दोबारा हमला आवर हो गए। इस अचानक हमले में बहुत से सहाबा-ए-किराम रज़ि० शहीद हो गए और मुसलमानों के पांव उखड़ गए। काफिरों ने नबी-ए-करीम स.अ.व. की तरफ यलगार

कर दी, उस वक्त जो चन्द बहादुर सहाबा नबी स.अ.व. के साथ मैदान में जमकर खड़े रहे उनमें सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी थे। उस रोज़ सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कई काफिरों को जहन्नम वासिल किया। सैय्यदना हमज़ा रज़ि० इस मारके में शहीद हुए।

गजवा-ए-खन्दक के मौके पर जब सैय्यदना सलमान फारसी रज़ि० के मशवरे से खन्दक खोदी गई तो काफिरों ने उसे पार करने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। बिल आखिर उनके एक नामवर दिलेर 'अम्र बिन अब्दूद' ने वह खन्दक पार कर ली। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० इससे मुकाबले के लिए निकले। अम्र बिन अब्दूद पूरे अरब में बहुत बहादुर समझा जाता था। उसके बारे में ख्याल किया जाता था कि वह एक हज़ार सवारों के बराबर है। इसलिए आप स.ब.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० से फरमायाः

"अली, तुम बैठ जाओ!........यह अम्र बिन अब्दूद है।"

अम्र बिन अब्दूद ने फिर मुसलमानों को मुकाबले के लिए ललकारा। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० फिर मुकाबले के लिए बढ़े। आप स.अ.व. ने उन्हें फिर रोक दिया। तीसरी बार फिर अम्र बिन अब्दूद ने ताकत के घमण्ड में ललकारा। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० बेकरारी से अर्ज़ करने लगेः

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! मैं जानता हूं यह अम्र बिन अब्दूद है। आप मुझे उससे मुकाबले की इजाज़त दें।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का जज़्बा देख कर आप स.अ.व. ने उन्हें इजाज़त दे दी। दरबारे रिसालत से इजाज़त पाकर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० जल्दी से मैदान में उतरे और अम्र बिन अब्दूद के मुकाबिल

हो कर यूं गोया हुए:

"मैंने सुना है तुमने लोगों से कह रखा है कि जो शख्स मेरे सामने तीन बातें पेश करे तो मैं उनमें से एक को मंजूर करता हूं।"

उसने कहा: "तुमने बिल्कुल ठीक सुना है।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कहा: "तब फिर मैं भी तुम्हारे सामने तीन बातें पेश करता हूं।

पहली बात यह है कि तु इस्लाम कबूल कर ले।

अम्र ने इंकार कर दिया। उन्होंने दूसरी बात पेश की:

"मुसलमानों से मत लड़! वापस चला जा।"

उसने उससे भी इंकार किया। तब सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ललकार कर और गरज कर बोले:

"तब फिर आ! मुझसे मुकाबला कर ले।"

अम्र बिन अब्दूद यह सुन कर हंस पड़ा, उसकी हंसी हैरत और तंज़ से भरपूर थी। कहने लगा:

"मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि अरब में कभी कोई मुझसे लड़ने की जुरअत करेगा।"

इतना कहकर वह अपने घोड़े से नीचे उतर आया और बोला "तुम कौन हो?"

"मेरा नाम अली बिन अबी तालिब है।" सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फरमाया।

"तुम्हारे वालिद मेरे दोस्त थे।" अम्र बिन अब्दूद ने कहा, मैं तुमसे

नहीं लड़ना चाहता।"

यह सुनकर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फरमाया: "लेकिन अल्लाह के दुश्मन! मैं तुझ से लड़ना चाहता हूं।"

यह सुनकर अम्र बिन अब्दूद भड़क उठा। आज तक ऐसा नहीं हुआ था कि मुकाबिल इस डट कर और ललकार कर उसके सामने खड़ा रहा हो उसने आगे बढ़कर पूरी ताकत के साथ सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० पर तलवार का वार किया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने तलवार का वार अपनी ढाल पर रोका लेकिन वार इस कद्र ज़बरदस्त था कि तलवार ढाल को काटती हुई उनकी पेशानी पर जा लगी। पेशानी पर ज़ख्म खाकर वह शेर की तरह इब्ने अब्दूद पर झपटे और उस पर ऐसा वार किया कि तलवार उसके कंधे को काटती हुई सीने तक चली गई और वह वहीं ढेर हो गया। इब्ने अब्दूद के गिरते ही सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने ज़ोर से नारे तकबीर बलन्द किया अपने शहसवार को यूं कटता देख कर दीगर काफिर जो खन्दक उबूर कर आए थे इस कद्र मरऊब हुए कि उल्टे पांव भागने लगे इनमें से एक काफिर अब्दुल्लाह बिन नोफिल खन्दक में गिर गया जिसे मुसलमानों ने तहेतेग कर दिया।

बनू करीज़ा से निपटने के इरादे से जब रसूलुल्लाह स.अ.व. ने जंग का इरादा किया तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को झण्डा देकर आगे रवाना फरमाया। तीन हज़ार मुजाहिदीन उनके साथ थे। लेकिन बनू करीज़ा लड़ाई से पहले ही हौसला छोड़ बैठे और हथियार डाल दिए।

मदीने से साठ किलो मीटर दूर फेदक नामी यहूदियों की बस्ती थी। यहूदी दर पर दर मुसलमानों की ज़बरदस्त मुखाल्फत कर रहे थे। वह खैबर के यहूदियों को मुकाबले के लिए उकसा रहे थे। रसूलुल्लाह

स.अ.व. उनके इरादों और साज़िशों से अच्छी तरह आगाह थे। उन की सरकोबी के लिए आप स.अ.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को दो सौ सवारों के साथ उनकी तरफ रवाना किया यहूदी शिकस्त खाकर भाग निकले।

सुलह हुदैबिया के मौके पर जब बैअते रिज़वान हुई तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी वहीं थे। जब सैय्यदना उस्मान रज़ि० खैरयत से वापस आ गए और सुलह नामा लिखा जाने लगा तो लिखने का फरीज़ा आप स.अ.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के सुपुर्द कर दिया। उन्हों ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से आगाज़ किया तो कुरैश के नुमाइन्दे ने इस पर एतराज़ किया और कहा:

"हम रहमान को नहीं मानते, लिहाज़ा यह लिखा जाए बिस्मेक अल्लाहुम्म।

रसूले करीम स.अ.व. की हिदायत पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने यही लिख दिया। उसके बाद रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फरमाया:

"लिखो, यह वह शरायत हैं जो मुहम्मद रसूलुल्लाह स.अ.व. ने कुरैश से तय की हैं। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने ये अल्फाज़ लिख दिए। कुरैश के नुमाइन्दे सुहैल बिन अम्र ने कहा:

"जब हम आपको अल्लाह का रसूल नहीं मानते तो फिर सुलह नामे में यह क्यों लिखा जाए? आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखवाईए।

इस एतिरज़ पर रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फरमाया:

"बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं, अगरचे तुम झुठलाओ, लेकिन ऐ

अली! यहां लिख दो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने यह हुक्म सुना तो अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल स.अ.व. मुझमें तो हिम्मत नहीं है कि मैं अपने हाथ से रसूलुल्लाह का लफ्ज़ मिटा दूं।"

उनकी बात सुन कर रसूलुल्लाह स.अ.व. ने खुद अपने दस्ते मुबारक से "रसूलुल्लाह" के अल्फाज़ को काट दिए, उसके बाद बाकी मुआहिदा तहरीर किया गया।

मदीने में यहूदी आए दिन मुसलमानों के खिलाफ साज़िशें करते रहते थे चुनांचे रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उन्हें मदीने से निकाल दिया। यहूदी वहां से निकले तो खैबर जा पहुंचे। खैबर में पहले ही बहुत से यहूदी मौजूद थे। उनकी ताकत जमा हो गई तो मुसलमानों के खिलाफ साज़िशों ने ज़ोर पकड़ लिया मदीने पर हमले की तैयारियां की जाने लगीं। रसूलुल्लाह स.अ.व. सारे हालात से आगाह थें। चुनांचे यहूदियों की सरकोबी का फैसला कर लिया गया। आप स.अ.व. १६०० सहाबा के साथ खैबर की तरफ रवाना हुए। सब किले एक-एक कर के फतह होते गए लेकिन कमूस नामी किला फतह न हो पाया कई सहाबा ने कोशिश की लेकिन कामयाब न हो सके बिल आखिर रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फरमाया:

"मैं कल झण्डा एक ऐसे शख्स को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह और उसका रसूल उससे मुहब्बत करते हैं, जिसके हाथ पर खैबर फतह हो जाए।"

दूसरे दिन का सूरज तलू हुआ। तमाम सहाबा-ए-किराम रज़ि० बड़ी शिद्दद से उस झण्डे के इन्तिज़ार में थे। क्योंकि वह सब अल्लाह और

उसके रसूल स.अ.व. से दिली मुहब्बत रखते थे। सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० फरमाते हैं कि यह वाहिद दिन था जब मैंने एमारत की ख्वाहिश की। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने दरयाफ्त कियाः

"अली कहां हैं?"

बताया गया कि उनकी आंखें दुखती हैं। आप स.अ.व. ने उन्हें बुलाकर उनकी आँखों में अपना लुआब मुबारक लगाया वह उसी वक्त ठीक हो गईं फिर आप स.अ.व. ने उन्हें झण्डा देकर कमूस के किले की तरफ रवाना फरमाया। कमूस का हाकिम मरहब था। उसका शुमार यहूदियों के नामी ग्रामी बहादुरों में होता था। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० कमूस पहुंचे तो मरहब ज़िरह सजाकर अकड़ता हुआ मैदान में उतरा। जब उसने अपने मुकाबले में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को देखा तो तंज़ के साथ बोलाः

"क्या मुसलमानों की फौज में तुमसे बेहतर कोई आदमी नहीं?" फिर तकब्बुर करते हुए अपनी बहादुरी के अश्आर कहने लगा जिनका तरजुमा यह है।: पुरा खैबर जानता है कि मैं मरहब हूं। बहादुर तजर्बाकार और लड़ाई के भड़कते शोलों का मुकाबला करने वाला।"

अपनी शुजाअत और बहादुरी की धाक बैठाने के लिए सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने मरहब का जवाब अशआर ही में दिया, जिनका तरजुबा यह हैः

"मैं वह शख्स हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम हैदर रखा। जंगल के शेर की तरह हैबतनाक और बहादुर। मैं दुश्मन को आंख झपकने में खत्म कर देता हूं।"

मरहब, ताकत के नशें में चूर आगे बढ़ा और सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० पर तलवार का वार किया। उन्होंने तेज़ी से एक तरफ होकर

उसका वार नाकाम किया और फिर आगे बढ़ कर मरहब पर ऐसा भरपूर वार किया कि उनकी तलवार उसके लोहे के खुद को काटती हुयी उस की खोपड़ी में उतर गयी वह वहीं मौत के घाट उतर गया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० फौज लेकर आगे बढ़े और किले का भारी भरकम दरवाज़ा तोड़ कर अन्दर पहुंच गए। कमूस की फतह ने पूरा खैबर उनके कदमों में डाल दिया।

खैबर की फतह सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के लिए एक और खुशी लाई। हबशा हिजरत कर जाने वाले बाकी मुसलमान भी वापस आ गए उनमें सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के भाई सैय्यदना जाफर बिन अबी तालिब रज़ि० भी थे। कई साल के बिछड़े भाई एक दूसरे से मिले तो आंखें भर आयीं।

सैय्यदना जाफर बिन अबी तालिब रज़ि० गज़व-ए-मूता में शहादत के मरतबा से हम किनार हुए। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के लिए यह बहुत बड़ा सदमा था। नबी स.अ.व. ने आपको इस मौका पर भरपूर दिलासा दिया उनके बच्चों की परवरिश सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने की। जब उनके बेटे अब्दुल्लाह जवान हुए तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने अपनी बेटी सैय्यदा ज़ैनब रज़ि० की शादी उनसे कर दी।

फतहे मक्का के तारीखी मौका पर भी सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० अल्लाह के रसूल स.अ.व. के हमराह थे। जब रसूलुल्लाह स.अ.व. ने बुतों को तोड़ना शुरू किया तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने भी हाथ बटाया। तांबे का एक बहुत बड़ा बुत वहां बहुत ऊंचाई पर नसब था और लोहे की एक सलाख के साथ ज़मीन में गड़ा हुआ था। रसूले करीम स.अ.व. ने उस बुत को गिराने के लिए सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को अपने कंधे पर सहारा देकर उस बुत को गिराने का हुक्म दिया। सैय्यदना

अली मुर्तज़ा रज़ि० ने पहले उस बुत को गिराया फिर उसे काबे से बाहर फेंक दिया।

फतहे मक्का का वाकिया काफिरों के लिए मुकम्मल शिकस्त और तबाही का पैगाम तो लाया ही था लेकिन कबीला हवाज़िन के लोग इस फतह से शदीद भड़क उठे थे। उन्होंने मुसलमानो पर हमला के लिए बड़ा लश्कर तैयार किया। रसूलुल्लाह स.अ.व. को भी उनके इरादों की खबर हो गई। शव्वाल ८ हिजरी में नबी-ए-करीम स.अ.व. ने बारह हज़ार मुसलमानों को लेकर दुश्मन का रूख किया हुनैन के मकाम पर दोनों फौजें आमने सामने आयीं, लेकिन दुश्मन पहले ही से एक चाल चल चुका था। उसने रात के वक्त आस पास की पहाड़ीयों में अपने तीर अन्दाज़ छुपा दिए थे। उन्होंने अचानक मुसलमानों पर तीरों की बारिश कर दी। मुसलमानों के साथ मक्के के ऐसे दो हज़ार अफराद भी शामिल थे जो अभी कुछ दिन पहले ही मुसलमान हुए थे। तीरों की अचानक बौछार ने उनके होश उड़ा दिए। वह पीछे हटे और सारी फौज बे तरतीब हो गई। उस वक्त रसूलुल्लाह स.अ.व. के हमराह सिर्फ चन्द बहादुर ही डटे रहे। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी उन बहादुरों मे शामिल थे। वह बेजिगरी के साथ काफिरों का मुकाबिला करते रहे। मुसलमान जो सिर्फ थोड़ी देर के लिए बौखलाहट में मुन्तशिर हो गए थे, संभल गए। उन्होंने इकट्ठा होकर फिर दुश्मनों पर हमला किया और दुश्मन को इबरतनाक शिकस्त से दोचार किया।

९ हिजरी में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को रसूलुल्लाह स.अ.व. ने एक सौ पचास सवारों के साथ यमन के बनू तय की तरफ भेजा। यह लोग भी बुत परस्त थे। मुसलमानों के आने की खबर उनके लिए काफी साबित हुई। वह लोग भाग निकले। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने

उनका बुत खाना गिरा कर बुत तोड़ डाले। अरब के मशहूर सखी हातिम ताई का तअल्लुक इसी कबीले से था। इसकी बेटी और बेटे अदी रज़ि० ने इस्लाम कबूल कर लिया।

फतहे मक्का के बाद अरब कबाएल बड़ी तेज़ी के साथ दायर-ए-इस्लाम में दाखिल हो रहे थे। आम ख्याल यह था कि शायद अब मुश्किलात का दौर खत्म हो गया। लेकिन यह ख्याल ज़्यादा दिनों तक कायम न रहा। मुसलमानों तक यह खबर पहुंची कि रूम का बादशाह मुसलमानों पर हमले के लिए तैयारी कर रहा है। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने इस मौका पर यह फैसला किया कि मुखालिफत के इस तुफान का मुंह आगे बढ़ कर मोड़ा जाए। चुनांचे मदीने में आपने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को अपना क़ायम मकाम बनाया और खुद तीस हज़ार फौज के साथ रवाना हो गए। यह गज़्व-ए-तबूक का वाकिया है।

इधर मदीने में मुनाफिकों ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को ताना दिया कि वह जंग से बचना चाहते थे। इसलिए वह लशकर के साथ नहीं गए। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को इस बात से बहुत रंज हुआ। न चाहते हुए भी वह हथियार सजा कर लश्कर तक जा पहूंचे। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने देख कर हैरान हुए और आने की वजह दरयाफ्त की। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने अर्ज़ किया:

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! मैंने शुरू से लेकर आज तक अल्लाह की राह में लड़ने से कदम पीछे नहीं हटाए। लेकिन मालूम नहीं इस दफा मुझे जिहाद में शिर्कत करने की सआदत हासिल करने की बजाए मदीने में क्यों छोड़ दिया गया।"

रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उनकी दिली कैफियत को महसूस करते हुए फरमाया:

"अली! क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम्हारे मेरे साथ वही तअल्लुक हो जो मूसा अलै० का हारून अलै० से था, सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।"

रसूलुल्लाह स.अ.व. के इस इर्शादे ग्रामी का मतलब था कि जिस तरह मूसा अलै० कूहे तूर पर जाते वक्त हारून अलै० को अपना कायम मकाम बना गए थे, मैंने भी इसी तरह तुम्हें अपना कायम मकाम बनाया है। फर्क सिर्फ इतना है कि हारून नबी भी थे, जबकि तुम नबी नहीं हो सकते, इसलिए कि मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

नबी-ए-करीम स.अ.व. की इस बात ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को न सिर्फ मुतमइन कर दिया बल्कि उनकी खुशी का कोई ठिकाना न था। उन्होंने मदीने का रूख किया और अपनी ज़िम्मेदारी उसी तरह निभाने लगे जिस तरह उन पर आयद की गई थी।

जंगे तबूक से वापसी के बाद रसूलुल्लाह स.अ.व. ने सैय्यदना खालिद बिन वलीद रज़ि० को हुक्म दिया कि वह यमन जाकर कबील-ए-हमदान तक इस्लाम की दावत पहुंचाएं। सैय्यदना खालिद रज़ि० यमन गए लेकिन कबील-ए-हमदान ने इस्लाम कबूल न किया। चुनांच सैय्यदना खालिद रज़ि० वापस आ गए, तब रसूलुल्लाह स.अ.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को यमन भेजा। आप स.अ.व. ने उन्हें खत भी दिया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कबील-ए-हमदान वालों को वह खत पढ़कर सुनाया और फिर बड़े दिलनशीं और दिलकश अंदाज़ में उन्हें इस्लाम की दावत दी। रसूलुल्लाह स.अ.व. के खत ने उनके दिलों के तार छेड़ डाले थे। फिर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का वाज़ भी कुछ कम असरअंगेज़ न था। इन लोगों ने अपने दिल इस्लाम के लिए खोल दिए। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने अपनी कामयाबी की यह खबर

रसूलुल्लाह स.अ.व. को भेजी तो आप स.अ.व. ने शुक्र का सजदा अदा किया और यह अलफाज़ अदा फरमाए:

"हमदान के लोगों पर सलामती हो! हमदान के लोगों पर सलामती हो!"

हिजरत के दसवें साल सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को कबीला-ए-मज़हिज को इस्लाम की दावत देने के लिए यमन रवाना किया गया। तीन सौ सवार उनके साथ थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उन्हें हिदायत फरमाई:

"उस वक्त तक तलवार न उठाई जाए जब तक कोई तुम पर हमला न कर दे।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० मज़हिज के इलाके में पहुंचे तो खैर की कोई अलामत नज़र न आयी। वह लोग लड़ने मरने पर तुले हुए थे। चुनांच सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी जंग के लिए तैयार हो गए। गो कि उनके साथ सिपाह कम थी, लेकिन वह सिपाह थी जिनमें जज़्बों की कमी नहीं थी। कबीला मज़हिज के जंगजुओं के साथ ज़बरदस्त जंग हुयी लेकिन वह लोग ज़्यादा देर तक मुकाबला न कर पाए और भाग खड़े हुए। शिकस्त खाने के बाद कबीले का सरदार दूसरे लोगों के साथ सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की खिदमत में हाज़िर हुआ और इस्लाम कबूल कर लिया। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को वहां का काज़ी मुकर्रर फरमाया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० वहां चन्द माह मुकीम रहे, इस अर्से के दौरान उन्होंने कुछ मुकदमात के फैसले भी किए।

इसी साल सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने रसूलुल्लाह स.अ.व. के

साथ हज किया। रसूलुल्लाह स.अ.व. के हुक्म पर उन्होंने कुरबानी के ऊंटों का गोश्त तकसीम किया। यह नबी-ए-करीम स.अ.व. का पहला और आखिरी हज था यह हज, हज्जतुलविदा कहलाया। इस हज से वापसी के कुछ ही अर्से बाद नबी-ए-करीम स.अ.व. बीमार हो गए और हिजरत के ग्यारहवें साल आप स.अ.व. इस दुनिया से रूखसत हो गए।

आप स.अ.व. की वफात सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० और बाकी सहाबा-ए-किराम रज़ि० के लिए एक बहुत तकलीफ दे सदमा थीं उन्होंने दूसरे सहाबा-ए-किराम के साथ मिल कर आप स.अ.व. को गुस्ल दिया। ओसामा बिन ज़ैद, अब्दुर्रहमान बिन औफ और फज़्ल बिन अब्बास रज़ि० के साथ मिल कर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने आपको कब्र में उतारा।

रसूलुल्लाह स.अ.व. की वफात हर मुसलमान के लिए एक बहुत बड़ा सानेहा थी। लोगों को यकीन ही नहीं आता था कि ऐसा हो चुका है आप स.अ.व. की वफात से मुसलमानों को शदीद सदमा पहुंचा, गम और परेशानी के इन्हीं लमहात में सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० को खलीफा चुन लिया गया। सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० से दिली मुहब्बत रखते थे, उनका बेहद इहतिराम करते थे और खिलाफत के मुआमले में उनसे मशवरे भी लिया करते थे। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. की वफात के छः माह बाद सैय्यदा फातिमा रज़ि० भी वफात पा गईं। यह सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के लिए एक और सदमा था।

सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० को खलीफा मुनतखब होते ही जिन मसायल का सामना करना पड़ा उनमें मुनकरीने ज़कात और इस्लाम

से फिर जाने वालों का मुआमला सरे फिहरिस्त था। उन मुरतदीन के खिलाफ जंग में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने भरपूर शिर्कत की। जब सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने वफात पाई तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० उनके दरवाज़े पर आए और फरमायाः

"आप पर अल्लाह की रहमत हो, आप रसूलुल्लाह स.अ.व. के प्यारे साथी और मदद करने वाले अल्लाह से सबसे ज़्यादा डरने वाले और दीन को सबसे बढ़ कर नफा पहुंचाने वाले थे।"

उसके बाद सैय्यदना उमर रज़ि० की खिलाफत का दौर शुरू हुआ। उन्होंने हुकूमत चलाने में मदद के लिए मजलिसे शुरा कायम की। इस मजलिस में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० भी शामिल थे। सैय्यदना उमर रज़ि० के साढ़े दस सालह दौरे खिलाफत में उनसे बाकायदा मशवरे लिए जाते थे। जिन झगड़ों का फैसला दूसरे सहाबा नहीं कर पाते थे वह सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के सामने पेश किए जाते थे। सैय्यदना उमर रज़ि० फरमाया करते थेः

"हम में सबसे बड़े काज़ी अली हैं।"

एक मरतबा सैय्यदना उमर रज़ि० ने एक फैसला दिया, सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उसके खिलाफ राय दी। उन्होंने आपकी राय को दुरूस्त करार दिया। सैय्यदना उमर रज़ि० के दिल में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के लिए न सिर्फ बहुत मुहब्बत थी। बल्कि वह उनकी बहुत इज़्ज़त भी करते थे। १६ हिजरी में जब उन्होंने बैतुल मुकद्दस का सफर किया तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को अपना कायम मकाम बना कर उन पर अपने एतेमाद और भरोसे को साबित किया।

सैय्यदना उमर रज़ि० के दौरे खिलाफत में इस्लामी सल्तनत में

बेपनाह उसअत हुई। फतुहात का दायरा फैलता जा रहा था। उस दौर की सबसे बड़ी लड़ाई नहावन्द की समझी जाती है। ईरानियों का बहुत बड़ा लशकर नहावन्द के मकाम पर मुसलमानों के मुकाबले के लिए जमा हो गया था। सैय्यदना उमर रज़ि० ने इस मौका पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को मुसलमानों के लशकंर का सालार बनाना चाहा लेकिन उन्होंने मदीने से बाहर जाने से इनकार कर दिया। सैय्यदना उमर रज़ि० ने खुद सालार बन कर जाने का इरादा किया तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फरमायाः

"आप मदीने को हरगिज़ न छोड़ें।"

चुनांचे सैय्यदना उमर रजि को आपका मशवरा मानना पड़ा।

सैय्यदना उमर रज़ि० जब कातिलाना हमले में शदीद ज़ख्मी हो गए और बचने की कोई उम्मीद न रही तो उन्होंने खिलाफत के लिए छः सहाबा के नाम तजवीज़ किए कि मुसलमान उनमें से जिसको चाहें खलीफा बना लें। उनमें सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का नाम भी शामिल था। बाकी सहाबा के नाम ये थेः सैय्यदना उस्मान, सैय्यदना साद बिन अबी वकास, सैय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ, सैय्यदना ज़ुबैर बिन अव्वाम और सैय्यदना तलहा बिन ओबैदुल्लाह रज़ि०। सैय्यदना उस्मान और सैय्यदना अली रज़ि० अन्हुमा के अलावा बाकी चारों अफराद ने अपने नाम वापस ले लिए। लोगों ने सैय्यदना उस्मान रज़ि० को खलीफा मुन्तखिब कर लिया। सैय्यदना उस्मान रज़ि० के खिलाफत के दौरान सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० उनकी भर पूर मदद करते रहे। आपस के तअल्लुकात हमेशा खुशगवार रहे। शरीयत के मसायल में सैय्यदना उस्मान रज़ि० उनसे फैसला कराते। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उन्हें हमेशा अच्छे और मुफीद मशवरे दिए।

सैय्यदना उस्मान रज़ि० के खिलाफ जब कुछ लोगों ने बेबुनियाद इल्ज़ामात लगा कर फसाद का आगाज़ किया तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने इस फसाद और फितने के खातमें के लिए सैय्यदना उस्मान रज़ि० को बहुत से मशवरे दिए। खुद सैय्यदना उस्मान रज़ि० ने सूबों के गवर्नरों को बुलाकर इस साज़िश से निपटने के लिए उनसे राय मांगी। लेकिन अपनी नरम मिज़ाजी की वजह से वह किसी सख्त एकदाम से गुरेज़ करते रहे। मिस्र, कूफा और शाम के बागी जब मदीने में हज़ारों की तादाद में जमा हो गए तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने ही उन्हें समझा बुझा कर वापस जाने पर आमादा किया, लेकिन वह लोग तो आये ही फितना बरपा करने के लिए थे। वह सैय्यदना उस्मान रज़ि० के खून के प्यासे थे। फिर लौट आये। उन्होंने सैय्यदना उस्मान रज़ि० के मकान को घेरे में ले लिया। उस वक्त भी सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने मुसलसल उन्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन वह लोग कहां मानने वाले थे। साज़िशी लोगों ने कब अमन और सुकून को पसन्द किया है।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने जब देखा कि वह लोग अपने मुतालबात पर डटे हुए हैं और उनकी कोई बात नहीं मान रहे तो उन्होंने अपने बेटों सैय्यदना हसन और सैय्यदना हुसैन रज़ि० अन्हुमा को सैय्यदना उस्मान रज़ि० की हिफाज़त के लिए उनके दरवाज़े पर मुकर्रर फरमाया। दूसरे सहाबा की तरह उनके ज़ेहन में भी यही बात थी कि बागी अपने मुतालबात मनवाना चाहते हैं। उनसे या तो बातचीत में यह मसला हल हो जाएगा या फिर मुतालबात न माने जाने की सूरत में वह लोग तंग आकर खुद ही वापस चले जाएंगे।

बागियों ने सैय्यदना उस्मान रज़ि० के लिए पानी और खुराक पर पाबन्दी लगा दी तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कुछ आदमियों को पानी देकर भेजा। वह लड़ते भड़ते पानी पहुंचाने में कामयाब हो गए। इस

झड़प में सैय्यदना हसन रज़ि० ज़ख्मी भी हुए। सैय्यदना हसन व हुसैन रज़ि० अन० दिगर सहाबा के साथ दरवाज़े पर बागियों को रोके हुए थे कि बागी दूसरी तरफ की दीवार फांद कर मकान में दाखिल हो गए और सैय्यदना उस्मान रज़ि० को शहीद कर दिया।

सैय्यदना उस्मान रज़ि० की शहादत उम्मते मुसलेमा के लिए एक बहुत बड़ा सानेहा थी। उनकी शहादत के बाद मदीने में अफरा तफरी का समा था। शहर पर बागियों का कब्ज़ा था। इस्लामी सल्तनत लाखों मुरब्बा मील पर फैली हुई थी लेकिन उस सल्तनत का कोई सरबराह नहीं था। ऐसे वक्त में सबकी नज़रें सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की तरफ उठीं। इस नाजुक वक्त में वही खिलाफत के लिए मौज़ू साबित हो सकते थे। लोगों ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० से दरख्वास्त की कि वह खिलाफत की ज़िम्मेदारी संभालें, लेकिन उन्होंने साफ इंकार कर दिया उनकी इंकार ने हालत को और भी नाज़ुक कर दिया। खिलाफत की ज़िम्मेदारी उठाने से इंकार के बावजूद आपको आमादा करने की कोशिश करते रहे।

मुहाजरीन, अंसार और मदीने के दीगर सहाबा ने मिल कर सख्त इसरार किया कि वह खिलाफत कबूल कर लें। इस बार दरख्वास्त करने वालों में बागी भी शामिल थे। बिल आखिर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को उन सब की बात माननी पड़ी और वह खिलाफत की ज़िम्मेदारी निभाने पर तैयार हो गए। चुनांचे सैय्यदना उस्मान रज़ि० की शहादत के तीन या छः दिन के बाद मदीने में मौजूद तमाम लोगों ने मस्जिदे नबवी में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के हाथ पर बैअत कर ली। इस तरह वह मुसलमानों के चौथे खलीफा राशिद बने।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० पौने पांच साल तक खलीफा रहे। खिलाफत का सारा ज़माना उनके लिए बेइन्तिहा कठिन और दुश्वार था।

वह मुसलसल मुश्किलात में घिरे रहे कोई और होता तो कबका हौसला हार चुका होता। लेकिन वह सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० थे, जुरअत, जवां मर्दी और इल्म व ज़िहानत में बेमिसाल। उन्होंने बड़े सब्र और हौसले के साथ दुशवारियों को सामना किया। खलीफा बनते ही सबसे पहली मुश्किल तो यही पेश आई कि सैय्यदना उस्मान रज़ि० के कातिलों को किस तरह पकड़ा जाए? खलीफ-ए-वक्त की शहादत कोई मामूली वाकिया नहीं था। यह हर दिल की पुकार थी कि सैय्यदना उस्मान रज़ि० के खून का बदला लिया जाए। उनके कातिलों को सख्त तरीन सज़ा दी जाए।

आम सहाबा के साथ खुद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के दिल में ये ख्वाहिश पूरी शिद्दत के साथ मौजूद थी कि सैय्यदना उस्मान रज़ि० के कातिलों को हर सूरत में गिरफतार होना चाहिए। लेकिन मुश्किल ये थी कि जिन लोगों ने सैय्यदना उस्मान रज़ि० के मकान को घेरा था उनकी तादाद हज़ारों में थी। उनमें कातिल कौन था, ये पता चलाना बहुत मुश्किल था। क्योंकि मौके का कोई गवाह नहीं था। जिस वक्त सैय्यदना उस्मान रज़ि० शहीद हुए उस वक्त उनके पास सिर्फ उनकी ज़ौजा मोहतरमा नायला रज़ि० थीं। शौहर को बचाते हुए उनकी तीन उंगलियां कट गई थीं। उन्होंने सिर्फ इतना बताया कि तीन आदमी अन्दर आए थे। उनमें से मुहम्मद बिन अबी बकर रज़ि० थे। उनका नाम सामने आने पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को शदीद हैरत हुई। ये सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० के छोटे बेटे थे। वालिद की वफात के बाद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ही ने इनकी परवरिश की थी। दोसरे दो आदमियों को सैय्यदा नायला रज़ि० नहीं पहचानती थीं।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने मुहम्मद बिन अबी बक्र रज़ि० को

पकड़ा तो उन्होंने कहा:

"मैं मकान में दाखिल ज़रूर हुआ था लेकिन जब सैय्यदना उस्मान रज़ि० ने मुझसे फरमाया कि भतीजे! तुम्हारे वालिद ज़िन्दा होते तो उन्हें तुम्हारी ये हरकत पसन्द न आती, तो मैं शर्मिन्दा होकर पीछे हट गया और बाहर निकल गया।"

सैय्यदा नायला रज़ि० ने भी उनके बयान की तसदीक की।

मुआमला बहुत पेचीदा हो चुका था। किसी के खिलाफ कोई सबूत था न कोई गवाह! लोग थे कि इंतकाम और बदले की पुकार बुलन्द किए जा रहे थे। इस मौके पर लोग यह भी शक करने लगे कि शायद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० खुद, जान बूझ कर कातिलों को नहीं पकड़ रहे हैं। इस बदगुमानी की वजह यह थी कि सारे बागी सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की बैअत कर चुके थे। और बहुत से उनकी फौज में शामिल हो चुके थे। हालात इतने नाज़ुक थे कि ये मुम्किन ही नहीं था कि लोगों को चुन-चुन कर फौज से निकाल दिया जाता। इस्लाम का कानूने शहादत यह कहता था कि बगैर गवाह और सुबूत के किसी को कातिल नहीं ठहराया जा सकता।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के खिलाफ बदगुमानी रखने वालों की तादाद महदूद थी। अक्सर लोग इस बात से आगाह थे कि इनकी राह में कितनी मुश्किलात हाएल हैं। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने सैय्यदना उस्मान रज़ि० की शहादत से पहले भी बागियों को समझाने की कोशिश की, जब मकान उनके घेरे में था, तब भी नरमी और सख्ती दोनों तरह से बात करके देख ली। खुद सैय्यदना उस्मान इस बात को सख्ती से नापसंद करते थे कि सिर्फ इनकी ज़ात के लिए किसी मुसलमान का खून

बहे। इसी बिना पर उन्होंने दूसरे सूबों से इस्लामी फौज को तलब किया और न मदीने में मौजूद सहाबा को अपने दफा के लिए लड़ने की इजाज़त दी। इसके बावजूद अक्सर सहाबा इनके दिफा और तहफ्फुज़ के लिए कोशां थे और इनमें सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का नाम सरेफिहरिस्त है।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने सूबों के नये गवर्नर मुकर्रर फरमाए। तमाम गवर्नरों ने सूबों में जाकर पुराने गवर्नरों की जगह संभाल ली लेकिन शाम के गवर्नर सैय्यदना अमीर मुआविया रज़ि० ने गवर्नरी से दस्तबरदार होने से इनकार कर दिया और सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के मुकर्रर करदा गवर्नर सहल बिन हनीफ रज़ि० को वापस जाने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने उनके ज़रिया सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को पैगाम भेजा:

"जब तक सैय्यदना उस्मान रज़ि० के कातिलों को गिरफ्तार नहीं किया जाएगा वह गवर्नरी से दस्तबरदार नहीं होंगे।"

यूं इब्तिदा ही में सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को एक बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा। अभी वह इस मुश्किल से निपटने की कोशिश कर रहे थे कि एक और मुश्किल सामने आ गयी। सैय्यदना उस्मान की शहादज उस वक्त हुई जब ज़्यादा तर लोग हज के लिए गए हुए थे। उम्मुल मुमिनीन सैय्यदा आयशा रज़ि० भी हज के लिए गई हुई थीं। हज के बाद वापस तशरीफ ला रही थी कि रास्ते में उनकी मुलाकात अपने एक करीबी रिश्तेदार से हो गई। उन्होंने बताया कि सैय्यदना उस्मान शहीद कर दिए गये है और लोगों ने सैय्यदना अली के हाथ पर बैअत कर ली है, लेकिन इस बैअत के बावजूद मदीना अभी फसाद की ज़द में है।

यह खबर सुन कर सैय्यदा आयशा मक्के की तरफ पलट गईं। इनके मक्का पहुंचते ही मदीना में सैय्यदना तलहा और सैय्यदना ज़ुबैर रज़ि० भी इनके पास पहुंच गए। ये बुज़ुर्ग सहाबा अशरा मुबश्शेरा में शामिल थे। उन्होंने भी मदीने के हालात बताते हुए कहा:

"मदीने के लोग फसादियों के हाथों परेशान हैं। न तो वह अपनी हिफाज़त कर सकते हैं और न उनमें सैय्यदना उस्मान रज़ि० के खून का बदला लेने की ताकत है।"

मक्का के लोग सैय्यदा आयशा रज़ि० की वापसी पर हैरान थे। उन्होंने वापसी का सबब दरयाफत किया तो उन्होंने फरमाया:

"उस्मान रज़ि० मज़लूम शहीद कर दिए गए हैं, और फितना दबता हुआ नज़र नहीं आता, इसलिए उस फितने को दूर करने और शहीद खलीफा के कातिलों से बदला लेने के लिए तैयार हो जाओ। इसी तरह इस्लाम की इज़्ज़त बचाई जा सकती है।"

इस पर हज़ारों मुसलमान उम्मुल मुमिनीन सैयदा आयशा रज़ि० और सैय्यदना तलहा व ज़ुबैर रज़ि० अ० की पुकार पर जमा हो गए। और इस लश्कर ने बसरा पहुंचे कर कब्ज़ा कर लिया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को उन हालात की खबर मिली तो वह भी अपना लश्कर लेकर बसरा के करीब पहुच गए, और सुलह की कोशिश शुरू कर दी। सैयदा आयशा रज़ि० ने अपने आनें की वजह बयान फरमाई तो सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उनके मुवक्किफ को दुरूस्त तसलीम करते हुए अपनी मुश्किलात का ज़िक्र किया कि सैयदना उस्मान रज़ि० के खून का बदला तो वह खुद भी लेना चाहते हैं लेकिन न तो कोई मौके का गवाह मौजूद है और न कोई सबूत, और फिर बागी जो हज़ारों की तादाद में थे, तायब हो कर इस्लामी फौज में शामिल हो चुके हैं।

सैयदा आयशा रज़ि० उनकी मुश्किलात को समझ गईं। यूं मामिला सुलह सफाई से हल होने के करीब था। लेकिन दोनों तरफ के लश्करों के कुछ बदनियत और मुनाफिक लोगों ने जो इस्लाम की एमारत को कमज़ोर करना चाहते थे, साज़िशें शुरू कर दीं। उन्हें सुलह में नुकसान और जंग में फायदा नज़र आ रहा था। लिहाज़ा उन्होंने रात की तारीकी में जंग छेड़ दी। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० समझे कि उम्मुलमुमिनीन सैयदा आयशा रज़ि० ने जंग का आगाज़ कर दिया है और सैयदा आयशा रज़ि० यह समझीं कि सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने जंग छेड़ दी हैं इस तरह बगैर किसी इरादे के जंग शुरू हो गई। दोनों फौजों में ज़बरदस्त लड़ाई हुई बिल आखिर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को फतह हासिल हुई। फतह के बाद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने सैयदा आयशा रज़ि० का हाल मालूम करने के लिए उनके भाई मुहम्मद बिन अबी बकर को भेजा......फिर उन्होंने खुद सैयदा आयशा रज़ि० के पास जाकर पूछा:

"उम्मुल मुमिनीन रज़ि० (मोमिनों की मां) आपका मिज़ाज कैसा है?"

उन्होंने फरमाया: "मैं ठीक हूं।"

इसके बाद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उन्हें चन्द दिन बसरा में आराम और आसाइश के साथ ठहराया। फिर उनके भाई की निगरानी में दूसरी मुअज़्ज़ज़ ख्वातीन के साथ उन्हें मक्के की तरफ रवाना किया। उस वक्त सैय्यदा आयशा रज़ि० ने फरमाया:

"बच्चो ये लड़ाई गलत फहमी का नतीजा थी। अली से न पहले मेरा झगड़ा था न अब है।" सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने जवाब में कहा: "आप सच फरमाती हैं। आप हम सब की मां हैं, आपकी इज़्ज़त करना हम पर वाजिब है।"

सैयदा आयशा रज़ि० इस जंग के दौरान ऊंट पर सवार थीं इस

लिए इस लड़ाई को जंगे जमल कहा जाता है। इस जंग के बाद सैयदा आयशा रज़ि० हमेशा पशेमान रहीं और इस गलती को और इस गलत फहमी के नतीजे में होने वाली जंग को याद कर के रोती रहीं।

जंगे जमल के बाद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कुछ दिन बसरा ही में कयाम किया फिर १२ रजब ३६ हिजरी को कूफा चले गए। यहां पर पहुंच कर उन्होंने एक इंकलाबी फैसला किया। उन्होंने कूफा को मुल्क का सदर मकाम या दारूल खिलाफा करार दे दिया। दारूल खिलाफा पहले मदीना था। इस फैसले की बुनियादी वजह यही थी कि नबी-ए-करीम स.अ.व. के शहर मदीना को फसाद और झगड़ों से महफूज़ रखा जाए। इन मुआमलात से फारिग होने के बाद उन्होंने सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० की तरफ तवज्जह दी उनका बैअत से इंकार जिस वजह से था, उसको पेशे नज़र रखते हुए सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने उनके नाम एक खत लिखा जिसका मज़मून कुछ इस तरह से थाः "तुम भी मुहाजरीन और अंसार की तरह मेरी बैअत करो। इसके बाद कायदे के मुताबिक शहादते उस्मान रज़ि० का मुकदमा पेश करो मैं अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह स.अ.व. की सुन्नत के मुताबिक फैसला करूंगा।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० के हाथ यह खत सैयदना मुआविया रज़ि० को भेज दिया। सैयदना अमीर मुआविया ने इस खत के जवाब में लिखाः

"आप सैय्यदना उस्मान गनी रज़ि० के कातिलों को हमारे हवाले कर दें तो मैं और शाम के दूसरे तमाम लोग खुशी से आपकी बैअत कर लेंगें।"

कुछ अर्सा यूं ही खत व किताबत जारी रही अपनी अपनी मुवक्किफ

के हक में दलायल दिए जाते रहे लेकिन सूलह की कोई राह न निकल सकी।

जब सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को यकीन हो गया कि सैय्यदना अमीर मुआविया रज़ि० बैअत नहीं करेंगे तो उन्होंने जंग की तैयारी की और तकरीबन अस्सी हज़ार का लश्कर लेकर सफैन के मकाम पर पहुंच गए। सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० भी एक बड़े लश्कर के साथ मुकाबले पर पहुंच गए। सफैन शहर हलब के जनूब मशरिक और हमस के शुमाल मगरिब में दरयाए फरात के किनारे पर था। तीन महीने बीस दिन तक दोनों लश्कर आमने सामने पड़े रहे। इस मुद्दत के दौरान दोनों तरफ से बातचीत के ज़रिए मसला हल करने की कोशिश होती रहीं, लेकिन यह बातचीत किसी हतमी नतीजे तक न पहुंच सकी। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० समझते थे कि अमीर की बैअत सब मसायल पर फौकियत रखती है। अगर वह बैअत नहीं करेंगे तो मिल्लते इस्लामिया का मरकज़ कमज़ोर समझा जाएगा और दूसरे सूबों पर भी इसके असरात पड़ सकते हैं। जबकि सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० कातलीने उस्मान रज़ि० की गिरफतारी पर इसरार कर रहे थे। वह समझते थे कि खलीफ-ए-वक्त के कातिल भी अगर सज़ा नहीं पाते तो इसके अवामुन्नास पर बुरे असरात मुरत्तब होंगे। फिर इतने अज़ीम सहाबी की मौत कुछ कम अलमनाक सानेहा नहीं इस सानहा के ज़िम्मेदार हर सूरत में गिरिफ्त में आने चाहिएं।

दोनों फरीक अपने-अपने मुवक्किफ पर डटे हुए थे। इस अर्से में छोटी मोटी झड़पें भी होती रहीं। लेकिन आम लड़ाई सफर ३७ हिजरी में शुरू हुई। यह जंग कई दिनों तक जारी रही। मुनाफिक और फसादी लोगों की वजह से दोनों तरफ से मुसलमानों का खून बहता रहा। इन्हीं लोगों की वजह से सुलह की कोशिशें नाकाम होती रहीं। फिर एक दिन

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की फौज के ज़बरदस्त दबाव के सामने शामी फौज के कदम उखड़ गए। यह देख कर शामी फौज का एक दस्ता कुरआन को निज़ों पर उठा कर आगे बढ़ा और पुकार कर कहा:

"यह देखो! हमारे और तुम्हारे दरम्यान अल्लाह की किताब है।"

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की फौज ने कुरआन देख कर लड़ाई रोक दी। उसके बाद बातचीत का सिलसिला दोबारा चला। बिल आखिर यह तय हुआ कि फैसला दो सालिसों के सुपुर्द कर दिया जाए। वह आपस में मिल कर जो फैसला करेंगे वह उन सबको कबूल होगा। चुनांच सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की तरफ से सैयदना अबू मूसा अशरी रज़ि० सालिस मुकर्रर हुए और सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० की तरफ से अम्र बिन आस रज़ि०। इन दोनों अफराद से कहा गया कि वह रमज़ान के महीने तक फैसला कर दें।

इसके बाद सैय्यदन अमीर मुआविया रज़ि० दमिश्क और सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० कूफे की तरफ रवाना हो गए इस मौके पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० की फौज में सालिसी के हवाले से इख्तिलाफ पैदा हो गया। फौज का एक हिस्सा सालिस मुकर्रर करने की हिमायत करता था। जबकि दूसरा कहता था कि कुरआन को छोड़ कर इंसानों को फैसला करने वाला बनाना गुनाह है। दोनों गिरोह आपस में झगड़ते रहते थे और बात बात पर तलवारें निकाल लेते थे। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० बड़ी मुश्किल से इन्हें कुफे तक लाए, लेकिन बारह हज़ार आदमी जो सालिस मुकर्रर करने के खिलाफ थे फौज से अलग हो गए। उन लोगों को खारजी कहा गया।

मुकर्रर मुद्दत में दोनों सालिसों ने फैसला दे दिया, लेकिन यह फैसला

एक दूसरे से मुखतलिफ था। सैय्यदना अबू मुसा अशरी रज़ि० का फैसला था कि सैय्यदना अली व मुआविया रज़ि० अन्हुमा में से किसी को खलीफा मुकर्रर न किया जाए। इन्हें छोड़ कर मुसलमान जिसे चाहें खलीफा चुन लें। सैय्यदना अम्र बिन आस रज़ि० का फैसला यह था कि अबू मुसा अशरी ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को खिलाफत से अलग कर दिया है। मैं इनकी जगह सैय्यदना मुआविया रज़ि० को खलीफा मुकर्रर करता हूं। सैय्यदना अम्र बिन आस रज़ि० के इस फैसले से हर तरफ शोर मच गया। सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के हामियों ने यह फैसला मानने से इंकार कर दिया।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० फौज लेकर दमिश्क की तरफ बढ़ना चाहते थे कि खारजियों ने हर तरफ फसाद मचा दिया। उन्होंने गिरोहों की सूरत में लोगों को लूटना शुरू कर दिया। चुनांचे सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने पहले इनकी शोरिश को खत्म करना मुनासिब समझा। नहरवान के मुकाम पर खारजियों से शदीद जंग हुई। चार हज़ार खारजी मारे गए। इस तरह खारजियों का ज़ोर टूट गया। दूसरी तरफ सैय्यदना अमीर मुआविया रज़ि० ने अम्र बिन आस को फौज देकर मिस्र पर हमला कर दिया और वहां के गवर्नर को कत्ल कर के कब्ज़ा कर लिया। मिस्र के बाद शामी फौज ने हिजाज़, ईराक और यमन पर हमले शुरू कर दिए।

नहरवान की लड़ाई के बाद सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का इरादा शाम पर हमला करने का था। उन्होंने जंग की तैयारी भी शुरू कर दी थी। लेकिन शिकस्त खाने के बाद खारजी अभी चैन से नहीं बैठे थे। वह बदला लेने की नियत से शाज़िशें कर रहे थे। बिल आखिर उन्होंने यह मंसूबा बनाया कि सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि०, सैयदना मुआविया और

सैयदना अम्र बिन आस रज़ि० को कत्ल कर दिया जाए। इस काम के लिए तीन आदमी मुकर्रर हुए। अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम ने सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को, बर्क बिन अब्दुल्लाह ने सैय्यदना अमीर मुआविया रज़ि० को और अम्र बिन बक्र ने सैय्यदना अम्र बिन आस रज़ि० को शहीद करने की ज़िम्मेदारी ली। इन हमलों के लिए ४० हिजरी में रमज़ानुल मुबारक की १७ तारीख मुकर्रर की गयी। फज्र की नमाज़ के बाद का वक्त तय हुआ था।

मिस्र के गवर्नर सैयदना अम्र बिन आस रज़ि० उस रोज़ बीमार थे अपनी जगह उन्होंने खाजा बिन हुज़ाफा रज़ि० को नमाज़ पढ़ाने के लिए भेजा। अम्र बिन बक्र ने उनके धोखे में खारजा बिन हुज़ाफा रज़ि० को शहीद कर दिया। दमिश्क में बर्क बिन अब्दुल्लाह ने सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० पर उस वक्त हमला किया जब वह मस्जिद के दरवाज़े से बाहर निकल रहे थे लेकिन यह हमला कामयाब न हो सका। उन्हें मामूली ज़ख्म आया। कूफे में अब्दुर्रहमान बिन मुल्ज़िम इस रास्ते पर छुप कर बैठ गया, जिस रास्ते पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० नमाज़ के लिए गुज़रते थे। जब वह फज्र की नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ चले तो उन पर तलवार का वार किया। सर पर शदीद ज़ख्म आया। इब्ने मुल्ज़िम को वहीं गिरफतार कर लिया गया।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने अपने बेटों सैय्यदना हसन व हुसैन रज़ि० को बुलाकर कुछ नसीहतें की और अपने कातिल के बारे में फरमायाः

"उसे खाना खिलाओ, पानी पिलाओ और अच्छी तरह रखों अगर मैं इस ज़ख्म से मर जाऊं तो उसे क़त्ल करना। शरीअत का यही हुक्म है। उसके नाक व कान वगैरह न काटना। अगर मैं बच गया तो मेरी मरज़ी, चाहे उससे बदला लूं या मआफ कर दूं।"

लेकिन इब्ने मुल्ज़िम की तलवार ज़हर बुझी हुई थी। उस तलवर के ज़ख्म के रास्ते ज़हर पूरे जिस्म में फैल गया और आप हमले से तीसरे रोज़ १९ रमज़ानुल मुबारक ४० हिजरी को शहीद हो गए। इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन। शहादत के वक्त आपकी उम्र ६३ साल थी।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० के लिए खिलाफत कांटों की सेज साबित हुई। इन्हें अपने दौरे खिलाफत में सुकून का सांस लेना भी नसीब न हो सका। फिर भी उन्होंने मुल्कि इंतिज़ामात को बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश की अपने गवर्नर और अफसरों की सख्त निगरानी करते रहे। किसी ओहदे दार की मामूली सी शिकायत भी मिलती तो उसके खिलाफ कारवाई करते। अन्दरूनी मुश्किलात की वजह से उन्हें इस्लामी फतूहात को फैलाने का मौका न मिल सका। फिर भी ३५ हिजरी में बहरी रास्ते से हिन्दुस्तान पर हमले की इजाज़त दी। चुनांचे उस ज़माने में कोकिन बम्बई पर कामयाब हमला किया गया। यह इलाका उस वक्त सिंध में शामिल था।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० दरम्याने कद के और दोहरे जिस्म के मालिक थे। चेहरा बहुत खुबसूरत बा रोअब और रौनक वाला था। मिज़ाज में बहुत सादगी थी, उन्होंने हमेशा फकीराना ज़िन्दगी बसर की। आपके दिल में अल्लाह का बेपनाह खौफ था। तमाम ज़िन्दगी मामूली कान में रहे। दरवाज़े पर कभी दरबान खड़ा नहीं किया। कपड़ों को पेवन्द लगे होते थे और यह पेवन्द भी वह खुद अपने हाथों से लगाते थे। अपना वज़ीफा और दूसरी आमदनी खैरात कर देते थे। बाज़ार से सौदा खुद लाते। कहीं से माल आता तो तमाम का तमाम तकसीम कर देते। इसमें से अपने लिए कोई खास चीज़ न लेते न रिश्तेदारों को इनके हिस्से

से ज़्यादा देते। ज़रूरत के वक्त आप मेहनत मज़दूरी भी कर लेते थे।

आपको अद्‌ल व इंसाफ का हमेशा ख्याल रहता था। सबसे पूरा पूरा इंसाफ करते। अपने हक से ज़्यादा बैतुलमाल से एक पैसा भी लेना हराम समझते थे। इनका दरवाज़ा हर एक के लिए खुला रहता था। हर कोई बेला रोक टोक इनके पास आ सकता था। रिआया की बेहतरी और फलाह व बहबूद को हमेशा अहमियत दी। रिआया का हाल जानने के लिए खुद बाज़ारों और गलियों में गश्त किया करते थे। बैतुलमाल में जो रकम जमा होती थी, वह खुले दिल से गरीबों, मिस्कीनों और हकदारों में तकसीम कर देते। मुसलमानों के साथ-साथ आप गैरमुस्लिमों का भी पूरा-पूरा ख्याल रखते थे।

मुल्क की हिफाज़त के लिए आपने फौजी छावनियां कायम कीं। कई मज़बूत किले तामीर करवाए। दरयाए फरात पर पुल तामीर करवाया। बाज़ जगहों पर मस्जिदें भी बनवाईं। पूरी उम्र में आपने किसी न किसी सूरत में दीन की खिदमत करते हुए गुज़ार दी। यमन के सैकड़ों लोग आपकी कोशिशों से इस्लाम के दायरे में दाखिल हुए।

एक बार सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० को इत्तिला मिली कि कुछ लोग हैं जो उन्हें माबूद का दरजा देते हैं। आपने इन लोगों को पकड़वाया और सख्त सज़ा दी। अल्बत्ता जिन लोगों ने तौबा की उन्हें छोड़ दिया।

बसरा के गवर्नर उस्मान बिन हनीफ ने किसी अमीर आदमी की दावत कबूल कर ली, आपको इत्तिला हुई तो उसे लिखाः

''ऐ हनीफ! मैंने सुना है कि बसरा के एक दौलत मन्द ने तुम्हें बड़ी शानदार किस्म की दावत दी। तुमने दावत कबूल की और किस्म-किस्म के

खाने बड़े इतमिनान और मज़े से खाए। मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी कि तुम इस किस्म की दावतों में शरीक हुआ करोगे जिनमें गरीबों को पूछा तक नहीं जाता।''

ज़रीर नामी एक शख्स ने आपके दस्तरख्वान पर सादा खाना देखकर कहाः

''आपको परिन्दों का गोश्त पसन्द नहीं?''

आपने फरमायाः ''खलीफा को मुसलमानों के माल में सिर्फ दो प्यालों का हक है। एक खुद खाए और अपने बच्चों को खिलाए। दूसरा अल्लाह की मखलूक के सामने पेश कर दे।

ईद से चन्द दिन पहले किसी ने आपके कपड़ों में पेवन्द देखे तो कहाः

''अमीरूल मुमिनीन, आप दो दिरहम में नया जोड़ा क्यों नहीं खरीद लेते।''

आपने फरमायाः ''मुझे शर्म आती है कि मैं नए कपड़े पहनूं और कुफे में हज़ारों आदमियों ने पुराने कपड़े पहन रखे हों।''

खैबर की लड़ाई के मौके पर नबी-ए-करीम स.अ.व. ने आप को दुआ दी थीः

''ऐ अल्लाह! अली से गर्मी, सर्दी का असर दूर कर दे।''

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० का ज़्यादा तर वक्त अल्लाह तआला की इबादत में गुज़रता था। नमाज़ पढ़ते तो अल्लाह की ज़ात के सिवा किसी चीज़ का होश न रहता। शजाअत इनकी पहचान थी। इतने बहादुर

और दिलेर थे कि ज़िन्दगी भर कभी बड़े से बड़े शह ज़ोर की परवाह नहीं की। काफिरों के साथ बड़ी-बड़ी लड़ाईयों में रसूलुल्लाह स.अ.व. के साथ रहे। तबूक के अलावा उन्होंने तकरीबन हर जंग में शिरकत की। उन्हें अल्लाह के शेर का लकब मिला। निहत्थे आदमियों पर कभी वार नहीं करते थे। एक जंग में अपने दुश्मन को ज़मी पर गिरा लिया। उसको कत्ल करने लगे तो उन्होंने आपके मुंह पर थूक दिया। आप फौरन उसके सीने से उतर आए और उसकी जान बख्श दी।

किसी ने पूछाः "आपने उसे क्यों छोड़ दिया?"

फरमाया! "मैं तो उससे अल्लाह के लिए लड़ रहा था। उसने जो हरकत की, उस पर मुझे गुस्सा आ गया। अब मैं उसे कत्ल करता तो गोया उस कत्ल में मेरा गुस्सा भी शामिल हो जाता। इसका मतलब यह होता कि मैंने उसे अपनी ज़ात के लिए कत्ल किया है।"

आपको रसूलुल्लाह स.अ.व. से गहरी मुहब्बत थी। रसूलुल्लाह स.अ.व. भी आपसे और आपकी औलाद से शदीद मुहब्बत रखते थे। सैयदना हसन और सैयदना हुसैन रज़िअल्लाह अन्हुमा अक्सर आप स.अ.व. की कंधों की सवारी करते थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. फरमाया करते:

"ऐ अल्लाह मैं इन दोनों से मुहब्बत करता हूं, तू भी इनसे मुहब्बत कर और जो इनसे बग्ज़ रखे तू भी उन्हें मब्गूज़ रख।"

सैयदा फातिमा से आपके यहां तीन बेटे और दो बेटियां हूईं। इनके नाम यह हैः हसन, हुसैन, ज़ैनब और उम्मे कुलसूम रज़ि० मोहसिन बचपन ही में फौत हो गए थे। सैयदा फातिमा की ज़िन्दगी में सैय्यदना

अली मुर्तज़ा रज़ि० ने दूसरी शादी नहीं की, इनकी वफात के बाद कई शादियां कीं जिनसे बारह लड़के और सोलह लड़कियां हुयीं।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० इल्म का समुन्द्र थे। आपकी इल्मी बातों ने बहुत शोहरत पाई। एक मरतबा एक औरत आपकी खिदमत में हाज़िर हुई। उसने शिकायत की कि मेरा भाई छः सौ दीनार छोड़ कर फौत हुआ है। जब यह रकम वारिसों में तकसीम की गई तो मुझे सिर्फ एक दीनार दिया गया। कहा यह गया कि तुम्हारे हिस्से में सिर्फ एक ही दीनार आता है। आपने इस औरत की शिकायत पर गौर किया, फिर बोले:

"शायद तुम्हारे भाई ने एक बीवी, दो लड़कियां, एक मां एक बहन और बारह बेटे छोड़े हैं।"

औरत ने हैरान होकर कहाः "आपका अन्दाज़ा बिल्कुल दुरूस्त है।"

इस पर सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फरमायाः "तब तुम्हारे हिस्से में एक ही दीनार आता है।



आपके चन्द अक्वाल आपकी इल्मी हैसियत और दानिश की अक्कासी के लिए पेश किए जा रहे हैं:

☆ गरीब वह है जिसका कोई दोस्त न हो।

☆ गुनाहों पर शर्मिन्दा होना इनको मिटा देता है और नेकियों पर मगरूर होना इनको बरबाद कर देता है।

☆ इल्म माल से बेहतर है, इसलिए कि इल्म तुम्हारी हिफाज़त करता है और माल की हिफाज़त तुम्हें करनी पड़ती है।

☆ जो चीज़ न आती हो उसके सीखने में शर्म न करो।

☆ मोसिबतों का मुकाबिला सब्र से करों और नेमतों की हिफाज़त शुक्र से करो।

☆ बात कहने वाले को न देखो बल्कि बात को देखो।

☆ मुसीबत में घबराना सबसे बड़ी मुसीबत है।

☆ सख्त तरीन गुनाह वह है जो करने वाले के नज़दीक मामूली हो।

☆ नेकी की कद्र कोई करे न करे, तुम किए जाओ।

☆ सखावत वह है जो मांगने से पहले हो।

☆ किसी सवाल का जवाब न आता हो तो यह कहने में न शरमाओ कि मैं नहीं जानता।

☆ मआफ कर दना बहुत अच्छा इन्तिकाम है।

☆ लालच से रोज़ी बढ़ नहीं जाती लेकिन इंसान की कद्र घट जाती है।